तृतीय अध्याय

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

अध्याय- तृतीय
शोध प्रविधि एवं प्रकिया

3.1 प्रस्तावना

अनुसंधान कार्य सही दिशा में अग्रसर होने के उद्देश्य से यह आवश्यक होता है कि शोध प्रबंध का व्यवस्थित अभिकल्प या रूपरेखा तैयार की जाये क्योंकि यही अभिकल्प ही शोध को एक निश्चित दिशा प्रदान करता है। इसमें न्यादर्श के चयन की अपनी विशेष भूमिका होती है। न्यादर्श जितने अधिक सुदृढ होगें शोध के परिणाम भी उतने ही विश्वसनीय एवं परिशुद्ध होगें। इसके बाद सांख्यिकीय विधि के माध्यम से प्रदत्तो का विशलेषण एवं व्याख्या कर निष्कर्ष निकाला जाता है तब कहीं जा कर एक शोध रूपी भवन खड़ा हो पाता है।

पी.वी.युंग के शब्दों में "अनुसंधान एक ऐसी व्यवस्थित विधि है जिसके द्वारा नवीन तथ्यों की खोज तथा प्राचीन तथ्यों की पुष्टि की जाती है। तथा उनके अनुक्रमों पारस्परिक संबंधो के कारणात्मक व्याख्याओं तथा प्राकृतिक नियमों का अध्ययन करती है। जो प्राप्त तथ्यों को निर्धारित करते हैं।

अतः अनुसंधान किसी क्षेत्र विशेष की समस्या का सर्वांगिण विश्लेषण है।

3.2 शोध डिजाईनः-

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा विद्यालयों में चलाये जा रहे सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में कक्षा 8वीं व कक्षा 10वीं के शिक्षको को उनके विभिन्न विषयों में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना है। अतः इस कार्य हेतु व्यक्गित साक्षात्कार अनुसूची प्रणाली का चयन वर्धा जिले (महाराष्ट राज्य) के सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में किया गया जिसमें

पहला :- जवाहर नवोदय विद्यालय- स्थान- सेलु (काटे)

दूसराः- केन्द्रीय विद्यालय - स्थान- सी.ए.डी. कैम्प, पुलगाँव

इन दो विद्यालयों के शिक्षको को उनके विभिन्न विषयों में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करने हेतु किया गया।

3.3 न्यादर्श का चयनः-

किसी भी अनुसंधान में प्रतिदर्श का चुनाव एवं उसकी संख्या महत्वपूर्ण पहलू होता है। शोधार्थी के लिये यह आवश्यक होता है कि आंकड़े कहां से कैसे प्राप्त किये जाये। इसके लिए पहले न्यादर्श का चयन करना आवश्यक होता है। किसी भी अनुसंधानकर्ता को अपने शोधरूपी भवन को बनाने के लिये न्यादर्श रूपी आधारशिला की आवश्यकता होती है। यह आधारशिला जितनी मजबूत होगी शोध कार्य उतना ही सुदृढ होगा।

"प्रतिदर्श जनसंख्या या लोक में से लिया गया कोई भाग होता है जो जनसंख्या के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता है।

करलिंगर के.आर. के अनुसार प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने न्यादर्श चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया है इसके अन्तर्गत महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जिले के सी.बी.एस.ई. के अन्तर्गत आने वाले दो विद्यालय अर्थात् जवाहर नवोदय विद्यालय एवं केन्द्रीय विद्यालय इनमें से कुल न्यादर्श के लिए 32 शिक्षको का चयन सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में आने वाली समस्याओं के लिए किया गया जिसमें 25 शिक्षको को उनमें कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। तथा अन्य 7 शिक्षको को उनमें कठिनाईयों का सामना नहीं करना पड़ा।

न्यादर्श का वर्गीकरणः-

न्यादर्श- 32 विद्यालयीन शिक्षको का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक 3.1 जवाहर नवोदय विद्यालय एवं केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षको की आयु सीमा (वर्षो में)

अनु. क्रमांक	आयु सीमा (वर्षो में)	जवाहर नवोदय विद्यालय		केन्द्रीय विद्यालय	
		कक्षा–8	कक्षा–10	कक्षा–8	कक्षा–10
1	25-29	-	01	02	03
2	30-34	-	01	-	01
3	35-39	-	04	-	01
4	40-44	-	06	-	-
5	45-49	02	03	-	03
6	50 के ऊपर	-	04	-	01

तालिका क्रमांक 3.2 जवाहर नवोदय विद्यालय एवं केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षको का लिंग

अनु. क्रमांक	आयु सीमा (वर्षो में)	जवाहर नवोदय विद्यालय		केन्द्रीय विद्यालय	
		कक्षा–8	कक्षा–10	कक्षा–8	कक्षा–10
1	पुरूष	02	11	01	11
2	महिला	01	04	01	01

तालिका क्रमांक 3.3 जवाहर नवोदय विद्यालय एवं केन्द्रीय विद्यालय के पुरूष एवं महिला शिक्षको के शिक्षण अनुभव

अनु. क्रमांक	शिक्षण अनुभव (वर्षो में)	जवाहर नवोदय विद्यालय		केन्द्रीय विद्यालय	
		कक्षा–8	कक्षा–10	कक्षा–8	कक्षा–10
1	10 वर्षो के नीचे	01	02	01	02
2	10–14	01	02	01	01
3	15–19	02	02	04	04
4	20–24	01	02	-	-
5	25–29	03	02	-	01

3.4 उपकरण एवं तकनीकः–

किसी भी शोध कार्य में उपकरणो का बहुत अधिक महत्व होता है क्योंकि इन उपकरणो के माध्यम से ही आवश्यक आंकड़े एकत्रित किये जाते है। किसी भी अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो की विश्वसनीयता प्रयुक्त उपकरण पर आधारित है। उपकरण का चयन एवं उपयोग बड़ी सावधानी पूर्वक किया जाना चाहिए जिससे परिणाम की विश्वसनीयता पर सन्देह न किया जा सके। प्रस्तुत शोध में प्रदत्त का संग्रह करने के लिए स्वरचित/निर्मित व्यक्तिगत साक्षात्कार अनुसूची उपकरण का उपयोग किया गया।

3.5 प्रदत्तो के संकलन की प्रक्रियाः–

शोध उपकरणो के प्रशिक्षण के लिए 10 दिन का समय निश्चित किया गया था। अनुसंधानकर्ता द्वारा 17 जनवरी से 4 फरवरी के दौरान मैदानी कार्य (फिल्ड वर्क) किया गया। अनुसंधानकर्ता ने प्रपत्रों की पूर्ति स्वयं सब विद्यालय में जाकर दोनो विद्यालायों के प्रधानाचार्य एवं उपप्रधानाचार्य के साथ मौखिक चर्चा करने के बाद

विभिन्न विषयो के शिक्षको से व्यक्गित संपर्क द्वारा किया गया तथा प्रत्येक शिक्षको को व्यक्गित साक्षात्कार अनुसूची प्रारूप दिया गया। इसके लिये वर्धा जिले महाराष्ट्र राज्य के दो केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड विद्यालयो का चयन किया गया। प्रदत्तो के संकलन के लिए क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान द्वारा एक समय सीमा निर्धारित की गई थी। शोधार्थी ने प्रत्येक एक विद्यालय में अलग-अलग निर्धारित तिथि, स्थान, समय पर विद्यालय में स्वयं जा कर प्रधानाचार्य एवं संस्था प्रधान से मिलकर बातचीत की और अपना परिचय देकर अपने आने का उद्देश्य बताकर शिक्षक-शिक्षिकाओं को लघुशोध प्रबंध विषय की जानकरी दी एवं शोधार्थी ने प्रत्येक एक विद्यालय में अलग एवं पूर्ण सहयोग हेतु व्यक्गित साक्षात्कार अनुसूची दे दी और साथ-साथ अध्याय से संबंधित कुछ सामान्य चर्चा भी की गई-

1. प्रदत्त जानकरी का उपयोग केवल शोध कार्य में ही किया जायेगा।
2. प्रदत्त जानकारी को गोपनीय रखा जायेगा।
3. कथन के उत्तर आपस में मित्रो से पूछकर देने के लिए सख्त मना किया गया था।
4. जो भी परीक्षण शिक्षको के ऊपर किया गया था, उसको उसी दिन लिया गया था।

लघुशोध के प्रदत्त संकलन हेतु प्रत्येक दो विद्यालयो के प्रधानाचार्यो एवं शिक्षको का पूर्ण सहयोग मिला।

प्रदत्त विश्लेषण योजनाः-

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी ने गुणात्मक विधि का उपयोग करते हुए शोध में दिये गये प्रदत्त का विश्लेषण किया